महाराष्ट्र के विमुक्त घुमंतू की पहचान

सूर्यकांत भगवान भिसे
वेलापूर जि . सोलापूर
9822023564

सारांश

भारत में घुमंतु जनजातियाँ मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक हैं और एक एकेश्वरवादी प्रथा है। लेकिन अगर पहली पत्नी लंबे समय से बीमार है, उसके पास बांझपन है या कोई अन्य महत्वपूर्ण कारण है, तो उन्हें दूसरी पत्नी रखने की अनुमति है। घुमंतु मुसलमानों की एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं; लेकिन लगभग सभी घुमंतु की एक ही पत्नी होती है l कुछ घुमंतु जनजातियों में विधवा विवाह, तलाक और अलग-अलग पारिवारिक प्रथाओं को भी अनुमति नहीं है। सभी घुमंतु समुदायमें जातपंचायत होती है l उसके कायदे कानून अलग अलग होते है l रितीरिवाज अलग अलग होते l सभी घुमंतु समुदाय में अंधश्रद्धा होती है और यही उनके विकास की जड है l

बीज शब्द- महाराष्ट्र, घुमंतू, समुदाय, इतिहास।

प्रस्तावना

महाराष्ट्र में घुमंतू समुदाय का गौरवशाली इतिहास रहा है। वही लोग जो हिंदवी स्वराज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के समय में जासूसी का काम करते थे l आज महाराष्ट्र में ये लोग घुमंतू समाज के रूप में जाने जाते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज के शासनकाल के दौरान, कई सरदारों को पुरस्कार के रूप में गाँव, परगना और ज़मीन दी गई थी। लेकिन घुमंतू समाज जिसने अपनी जान जोखिम में डालकर स्वराज्य के लिए जासूसी की, स्वराज्य बनाया, यह समाज आज भी उपेक्षित बना हुआ है। यदि हम इस समाज की उत्पत्ति को देखें, तो यह बहुत पुराना इतिहास है l भारतीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण इन्होनेही किया है।

महाराष्ट्र में घुमंतू समुदाय के अंतिम नाम भोसले, मोरे, जाधव, भिसे, गायकवाड़, चव्हाण, सालुंके, काले, शिंदे, माने, मोहिते, कदम, सरोदे , नाईक ऐसे हैं। ये सभी उपनाम मराठा समुदाय में भी हैं। इसलिए, महाराष्ट्र के इतिहास में कई सबूत ऐसे हैं कि घुमंतु समुदाय मराठा समुदाय से जुडा हुआ है।

महाराष्ट्र पर उस समय आदिलशाही और निज़ामशाही का शासन था। इतिहास यह है कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से इन दो राज्यों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और स्वराज्य का निर्माण किया। इस अवधि के दौरान, घुमंतू समुदाय के कुछ लोगों ने जैसे की , गोंधली, कुडमुडा जोशी, वासुदेव, डवरी, गोसावी इन्होने विभिन्न पहरे में जासूसी की। उन्होने शत्रु की जानकारी इकठ्ठा करके उसे महाराजा तक पहुँचाया l महाराजा ने शत्रु पर हमला किया और उन राज्यों पर छापामार युद्ध के द्वारा कब्जा कर लिया। यह महाराष्ट्र के विमुक्त घुमंतु का इतिहास है।

छत्रपति शिवाजी महाराज के बाद, देश ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया और घुमंतू समुदाय, जो स्वराज्य के लिए एक जासूस के रूप में काम कर रहा था, एक जीविका के लिए वह भटक गया।

इस समाज की जाति निर्वाह के लिए इस समाज द्वारा चुने गए व्यवसाय उनकी जात बन गयी। घुमंतु शब्द ग्रीक शब्द 'नोमी' या 'नेमो' से लिया गया है।

इनका कोई स्थायी घर या खेत नहीं, कोई प्रतिष्ठित व्यवसाय नहीं। लेकिन घोड़े, बैलों, गायों के पीठपर अपने संसार का बोझ लादकर रोजी-रोटी के लिए भटकते रहे। घुमंतु शब्द इन लोगों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया। इस शब्द या अवधारण का उपयोग न केवल जंगल में घूमने वाले लोगों के लिए किया गया , बल्कि उन लोगों के लिए भी किया गया जो स्थायी रूप से एक स्थान पर नहीं रहते थे। ऐसे लोग उन जगहों की तलाश में लगातार पलायन करते रहे l जहाँ वे खच्चरों,

गधों, टट्टुओं, घोड़ों, ऊँटों आदि पर अपनी संपत्ति लादकर अपनी मर्जी से या स्थिति के उत्पीड़न के कारण अपना अच्छा जीवन यापन कर सकते थे।

मनोरंजन, जिम्नास्टिक, जादू, अटकल, खुदरा, शिल्प, चिकित्सा , व्यापार , शिकार आदी व्यवसाय ये लोग करते रहे। घुमंतु के विभिन्न विकासवादी चरणों को ध्यान में रखते हुए, यह पाया गया है कि ' एक समय का भोजन चाहने वाले घुमंतु ' मानव का सबसे पहला चरण रहा है। वे प्राकृतिक संसाधनों जैसे की कंद, फल और मछली पर भरोसा करते थे 1

पाषाण युग में मानव पत्थर के औजार बनाने, आत्म-रक्षा और प्रतिकार के लिए उपयोग करने में सक्षम थे, और धातु और लकड़ी की लोच की खोज के बाद, वे कुछ बनाने में सक्षम थे l जैसे धनुष और तीर। इन हथियारों की मदद से वे शिकार करने में सक्षम थे। वे अपने आहार में शिकार किए गए जानवरों का मांस शामिल करते थे। उनको 'शिकारी भटके' के नाम से जानने लगे।

धीरे-धीरे उन्हें गायों और भैंसों के दूध के उपयोग, भेड़ और बकरियों से ऊन, घोड़े, ऊंट आदि का पता चला और दूरदराज के इलाकों की यात्रा शुरु की। उन्होंने अपनी सेवा में जानवरों को शामिल करना शुरू कर दिया। उन्हें पशुपालन से लाभ होने लगा। घुमंतू चरवाहों को 'चरण भटके' के नाम से जाना जाने लगा। जानवरों के झुंड के साथ 'चरण भटके' धरती पर उपजाऊ चरागाहों की तलाश में भटक रहे थे। उनके पास के जानवर पशुधन में तब्दील हो गए थे। जानवरों को खरीदा और बेचा जाना शुरू हुआ। जानवरों को खरीदने और बेचने वाले घुमंतु को 'व्यापारी घुमंतु ' कहा जाने लगा।

खेत की खोज के बाद, उन्होंने खेती के लिए बैल और नरकट जैसे जानवरों का इस्तेमाल किया। कृषि ने उनके जीवन में कुछ स्थिरता लाई। उन्होंने ऊन, हड्डियां, खाल और पशुओं और भेड़ बकरी के दूध से भी जीवनयापन किया। ऐसे घुमंतु को 'उत्पादक या पशुपालक घुमंतु ' कहा जाने लगा।

लोगों को अपने व्यवसाय के माध्यम से सेवाएं प्रदान करने और उनका मनोरंजन करने वाले घुमंतु को " सेवा या मनोरंजन करनेवाले घुमंतु " के नाम से जाना जाने लगा l उत्पादक, श्रमिक, सेवा और मनोरंजन करनेवाले, व्यापारी, चरण और शिकारी ऐसे छह वर्गो मे वर्गीकृत किया जा सकता है।

उत्पादक घुमंतु भेड बकरीयों और पशु उत्पादों (ऊन, हड्डियों और खाल) से अपना जीवन यापन करते रहे , साथ ही भेड बकरीयों की बिक्री या विनिमय से भी उनका भटकना पशु की जरूरतों से संबंधित है। वे पशुओंको चराने के लिए जरूरी चारागाहों की तलाश में भटकते रहे। जब एक चरागाह में घास खत्म हो जाती है, तो वे दूसरे चरागाह में चले जाते थे। भेड बकरीयां और पशुओं के झुंड से पूरक आय शिकार, मछली पकड़ने, औषधीय पौधों और कंद की कटाई से होती थी।

घुमक्कड़ अनाज, नमक और अन्य वस्तुओं को उन स्थानों से खरीदते थे , जहाँ वे सस्ते होते थे और उन्हें एक छोटे लाभ पर बेचते थे l जहाँ वे दुर्लभ थे। रस्सियों, मैट बनाने और बेचने, दवाइयां बेचने, लोहा के वस्तुए बनाने, भाड़े पर देने के साथ-साथ; धारदार चाकू, कैंची आदि वे भी काम करते थे। इस तरह के घुमंतु भारत में बंजारा, लमन , गादुला, घिसाड़ी-लोहार, शिकलगर के नाम से जाने जाते थे।

महाराष्ट्र , तेलंगाना, आंध्रप्रदेश , कर्नाटक , मध्यप्रदेश के बुडुबुडिकी, गोंधली और जोशी घर-घर में धार्मिक कार्यक्रम करते रहे l कालबेलियां , मदारी साँप का खेल करते थे l नट याने की डोंबारी समाज के लोग कसरत के खेल करते रहे l नंदीवाला समाज बैलोंसे खेल करते रहे l अतीत में, ऐसे लोगों को बदले में खाद्यान्न, पुराने कपड़े आदि मिलते थे।

महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु और अन्य राज्यों में घुमंतु समुदाय दिखाई जाता हैं।

विमुक्त घुमंतु समाज को 1) भिक्षुकी , 2) कलाकार या मनोरंजन करनेवाले 3) व्यापारी , 4) श्रमिक 5) उत्पादक या पशुपालक और 6) शिकारी ऐसे छह प्रकारो में वर्गीकृत किया जा सकता है l

1) अन्नशोधक या भिक्षुकी घुमंतु समुदाय में गोसावी, भराडी, भूते (भोपे), मसनजोगी, वासुदेव, मरेइवाले, कुडमुडे जोशी , हेलवे और गोल्ल शामिल हैं।

2) कलाकार या मनोरंजन करनेवाले घुमंतु समुदाय में गोंधली, चित्रकथी, मदारी , नट (डोंबारी) , कोल्हाटी, बहुरुपीया, नंदीवाले, कटाबू, मैराल और दरवेशी शामिल हैं।

3) व्यापारि घुमंतु समुदाय में बंजारा (लमन), घीसाडी , काशिकापडी, शिक्कलगर, भोई, थेलारी, ओटारी, भारतीय ईरानी, जोशी, लोहार और गाड़ी लोहार शामिल हैं।

4) श्रमिक घुमंतु समुदायमें बेरड, बेस्तर, कैकाडी, कंजरभाट, वडार, तकारी (पत्थरवट), रामोशी, राजपूत भामाटा, छप्परबंद, बेलदार, रावल और वंजारी शामिल हैं।

5) उत्पादक या पशुपालक घुमंतु समुदायमें गोपाल, गवली, मुस्लीम गवली , धनगर , धनगड समाज के लोग शामील हैं।

6) शिकार करने वाले घुमंतु समुदाय में पारधी, राजपारधी, गाय पारधी , हरण शिकारी , फासे पारधी और वाघरी समाज के लोग शामिल हैं।

भारत में घुमंतु जनजातियाँ मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक हैं और एक एकेश्वरवादी प्रथा है। लेकिन अगर पहली पत्नी लंबे समय से बीमार है, उसके पास बांझपन है या कोई अन्य महत्वपूर्ण कारण है, तो उन्हें दूसरी पत्नी रखने की अनुमति है। घुमंतु मुसलमानों की एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं; लेकिन लगभग सभी घुमंतु की एक ही पत्नी होती है l कुछ घुमंतु जनजातियों में विधवा विवाह, तलाक और अलग-अलग पारिवारिक प्रथाओं को भी अनुमति नहीं है। सभी घुमंतु समुदायमें जातपंचायत होती है l उसके कायदे कानून अलग अलग होते है l रितीरिवाज अलग अलग होते l सभी घुमंतु समुदाय में अंधश्रद्धा होती है और यही उनके विकास की जड है l

घुमंतू जातियां अपने व्यवसाय के कारण ही ग्रामीणों के संपर्क में आई। यह संपर्क स्थायी नहीं था। इसलिए, घुमंतु जनजातियों का गाँव के आर्थिक मामलों में बहुत महत्वपूर्ण स्थान नहीं रहा है।

आधुनिकीकरण के कारण गाँव की पारंपरिक अर्थव्यवस्था ढहने लगी । वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य मुख्य रूप से धन के रूप में निर्धारित किया जाने लगा। जिस तरह आधुनिकीकरण ने गाँव को प्रभावित किया l उसका असर घुमंतु जनजातियों पर पड गया । आधुनिकीकरण के कारण अपने कार्य में कुशल रह कर रोजी रोटी कमानेवाले घुमंतु अकुशल हो गये l नतीजा ए हुआ की घुमंतु समुदाय बेरोजगार हो गया l औद्योगीकरण के लिए वनों की कटाई हो गई । घास के मैदानों को नष्ट किया गया । वनों की कटाईसे घने जंगल बंजर हो गए। इसका घुमंतु समुदाय के व्यवसाय पर एक बड़ा प्रभाव पड गया । पशुओं को चराने के लिए जरूरी चारागाह अपर्याप्त हो गए। नतीजन, भेड बकरीयों के झुंडों को रखना मुश्किल हो गया और इसलिए भेड बकरीयों से प्राप्त उत्पादन ठंडे पड गये । जंगल में खेती के तहत भूमि पर प्रतिबंध थे l इसलिए घुमंतुओं के लिए जमीन पर खेती करना भी मुश्किल हो गया। नतीजा ए हुआ घुमंतू लोग अनप्रोफेशनल हो गए और भाड़े या बेकार उद्योगों में लगे रहे l जबकि कुछ भीख मांगने लगे।

आधुनिकीकरण ने अभी तक घुमंतु के व्यवहार को प्रभावित नहीं किया है। उनकी तटस्थता उनके पिछड़ेपन को दिखाती है। इसलिए, उनके सामने आने वाली समस्याओं और उनके समाधान पर विचार करना महत्वपूर्ण है। भारत हजारों गाँवों का देश है। इस देश की संस्कृति और परंपराएँ निश्चित रूप से अन्य देशों से भिन्न हैं। क्योंकि इस देशकी मिट्टीकी खुशबू ग्रामीण मिट्टी की है। "अनेकता में एकता" यह हमारे देश की पहचान है। गाँव का विकास गाँव में रहने वाले लोगों द्वारा लोक जीवन, लोक संस्कृति, उनकी आजीविका के साधनों, गाँव के साथ उनके संबंधों, गाँव की अर्थव्यवस्था, कृषि विकास, जल आपूर्ति आदि से हुआ है। इस विकास में विमुक्त घुमंतू का योगदान अमूल्य रहा है।